राजद समाचार

आजादी, समानता और भाईचारा

अंक-35 मासिक जून, 2024 सहयोग राशि 40 रुपये

इस बार

लोकसभा चुनाव परिणाम : एक पड़ताल

प्रधानमंत्री के नाम- तेजस्वी प्रसाद यादव 03

लोकसभा चुनाव में बिहार के जीते-हारे प्रत्याशियों की सूची 04

हिंदू राष्ट्र भाजपा का चुनौती-विहीन औजार- सत्येंद्र रंजन 06

मुसलमानों के लिए चुनाव बाद की वास्तविकताएं- नदीम खान 08

उ.प्र. और महाराष्ट्र बहुजन आंदोलन की भूमि- प्रो. रविकांत 10

पीडीए मंडल पार्ट-3 का आगाज है- डॉ. लक्ष्मण यादव 12

चुनाव परिणाम और उससे उपजे कार्यभार- सुनील कुमार 14

इस जनादेश के मायने क्या हैं- अरुण कुमार 16

सियासत पर भारी पड़ते जुमले- प्रो. राजकुमार जैन 18

जाति और वर्ग के आईने में लोकसभा चुनाव- संजय कुमार 20

हे पुरुषोतम गद्दी बचा रहे हैं या रद्दी- प्रफुल्ल कोलख्यान 21

तेजस्वी यादव : हार कर भी जीते हुए नायक- संजीव चंदन 23

बिहार में इंडिया बनाम एनडीए के बीच राजद- डॉ.दिनेश पाल 25

लोकसभा चुनाव और उसके संदेश- नरेंद्र कुमार 27

विस्तारित आरक्षण पर कोर्ट की तलबार

हमारा न्यायतंत्र विविधता के खिलाफ खड़ा है- मनीष शर्मा 30

योग्यता के नाम पर आरक्षण पर कुठाराघात- फैजान मुस्तफा 32

वर्ल्ड इक्वलिटी लैब की अद्यतन रिपोर्ट पर- अभय कुमार 33

पठन-पाठन

बाघ की आहट और खारेपन का शोर- श्रीधर करुणानिधि 36

कवि का पन्ना / पंकज चौधरी 40

सम्पादक

अरुण आनंद

सहयोग

कवि जी/ डॉ. दिनेश पाल/ साकिब अशरफी

जगदानन्द सिंह

प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय जनता दल, वीरचन्द पटेल पथ, पटना-01 द्वारा प्रकाशित एवं वितरित

राजद समाचार की ईमेल आईडी

samacharrjd@gmail.com

तानाशाही पर अंकुश का जनादेश, मगर अकड़ जारी

2024 का लोकसभा चुनाव सम्पन्न हो गया। इस अवधि में विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच परस्पर आरोप-प्रत्यारोप की जो जुबानी जंग जारी थी, उसपर विराम लग गया। इस 18वीं लोकसभा चुनाव में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। पिछले दो लोकसभा 2014 और 2019 के चुनाव में बेहतरीन प्रदर्शन करनेवाली भाजपा 272 के बहुमत के आकंड़े से बहुत पीछे रही। उसे कुल 240 सीटें आईं। वहीं पिछले चुनावों की बनिस्बत कांग्रेस का प्रदर्शन बेहतर रहा। इस चुनाव में उसे कुल 99 सीटें आईं जबकि 2019 में वह 52 सीटों पर सिमट कर रह गई थी। एनडीए घटक दल में कुल 41 पार्टियां शामिल थीं, जिसे 292 सीटें प्राप्त हुईं। वहीं इंडिया गठबंधन में 37 पार्टियां शामिल थीं, जिन्हें 234 सीटें मिलीं। भाजपा स्पष्ट बहुमत से दूर रही, लेकिन उनके सहयोगी दलों ने मिलकर बहुमत से ज्यादा सीटें जीतीं। इस चुनाव में भाजपा का सिमटना और विपक्षी दलों का मजबूत होना- जनतंत्र और जनता के लिए बहुत जरूरी था। पिछले 10 वर्षों में नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार जिस तानाशाही से देश को चला रहे थे, उसमें विपक्ष का कमजोर होना भी एक बहुत बड़ा कारक था। इस जनादेश से निश्चित रूप से उनके अहंकार पर अंकुश लगेगा।

इस चुनाव में पूर्व की कई धारणाएं और मिथ टूटे हैं। मसलन यह जो प्रचारित तथ्य था कि महिलाएं भाजपा को अधिक वोट करती हैं और धर्म के नाम पर भाजपा कभी पराजित नहीं हो सकती। ये दोनों ही धारणाएं टूटी हैं। इसबार भाजपा की बहुप्रचारित रामलला की जन्मभूमि अयोध्या की फैजाबाद लोकसभा से उनके उम्मीदवार लल्लू सिंह की हार हुई, महिलाओं ने एनडीए की अपेक्षा महागठबंधन को अधिक वोट किया और युवाओं के एक बड़े वर्ग ने धर्म की अपेक्षा रोजगार और संविधान रक्षा के सवाल को ज्यादा तवज्जो दिया खासकर बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में। इनमें से अंतिम तीन राज्यों के चुनाव परिणाम में इसकी स्पष्ट अनुगूंज सुनाई पड़ती है। इस बार संसद में मुस्लिम समुदाय और महिलाओं का प्रतिनिधित्व पिछली संसद की बनिस्बत घटा है। जबकि उम्मीद की जा रही थी कि इनकी संख्या में बढ़ोतरी होगी। इस लोकसभा में कुल 74 महिला सांसद आई हैं जो अपनी संख्या में पिछली लोकसभा से 4 कम हैं। इसमें भाजपा से 31, कांग्रेस से 13 और तृणमूल कांग्रेस से 11 सांसद हैं। महिलाओं के साथ ही मुसलमानों का भी प्रतिनिधित्व इस लोकसभा में कमा है। 17 वीं लोकसभा में इस समुदाय के 27 सांसद